

[2023] 4 एस. सी. आर 1124

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 4 एस सी आर।

ए.

नागरथिनम

वी.

पुलिस निरीक्षक के माध्यम से राज्य (2023 की आपराधिक अपील संख्या 1389)

बी.

04 मई, 2023

[अजय रस्तोगी और अहसानउद्दीन अमानुल्लाह, जे. जे.]

समयपूर्व रिहाई-अपीलार्थी का 'एस' के साथ संबंध था, जो उसे अक्सर धमकी देता था-अपीलार्थी ने अपने बच्चों के साथ आत्महत्या करने का निर्णय लिया-अपीलार्थी बच गया-बच्चों की मृत्यु हो गई-निचली अदालत ने अपीलार्थी यू/एस को दोषी ठहराया। 302 और 309 आई. पी. सी.-उच्च न्यायालय ने आंशिक रूप से अपील की अनुमति दी, अपीलार्थी को यू/एस से बरी कर दिया। 309 और यू/एस की सजा को बरकरार रखा। 302 आई. पी. सी.-20 साल के कारावास से गुजरने के बाद, अपीलार्थी ने समय से पहले रिहाई के लिए आवेदन किया-हालाँकि, इसे राज्य द्वारा खारिज कर दिया गया था-आयोजित: जब अपीलार्थी ने अपने बच्चों को जहर दिया तो वह जबरदस्त मानसिक तनाव में थी-समय से पहले रिहाई के लिए आवेदन को राज्य द्वारा इस आधार पर खारिज कर दिया गया था कि अपीलार्थी ने बिना किसी बाधा के अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए अपने दो बेटों की हत्या करने के लिए जहर दिया था, जो कि क्रूर और क्रूर प्रकृति का कार्य था-हालाँकि, अदालत ने ध्यान दिया कि अपीलार्थी ने कभी भी अपने अवैध संबंध को जारी रखने के उद्देश्य से अपने बेटों की हत्या करने की कोशिश नहीं की-इसके विपरीत, उसने अपने प्रेमी के साथ अपने अवैध संबंध को जारी रखने के उद्देश्य से नहीं बल्कि अपने प्रेमी द्वारा उठाए गए झगड़े पर निराशा और हताशा में खुद को आत्महत्या करने की कोशिश की थी-अपीलार्थी खुद अपने जीवन को समाप्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे समय पर उसकी भतीजी द्वारा रोका गया था-कुछ नहीं है। 302 और 309।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

अपील का निपटारा करते हुए, न्यायालय ने

पकड़ना: 1. समय से पहले रिहाई के मुद्दे पर, यह विवाद में नहीं है कि आजीवन कैदियों के मामले में कैदियों को समय से पहले रिहाई का लाभ कारावास के न्यूनतम दस साल पूरे करना है।

एच.

नागरथिनम बनाम राज्य पुलिस निरीक्षक ए के माध्यम से

आई. डी. 1 पर, और जी. ओ. (एम. एस.) संख्या 64 दिनांक आई. डी. 2 में इस तरह के उद्देश्य के लिए, ऐसी सिफारिशें करने के लिए एक राज्य स्तरीय समिति है। वर्तमान मामले में, अपीलार्थी की समय से पहले रिहाई के लिए राज्य स्तरीय समिति की सकारात्मक सिफारिश को राज्य द्वारा इस आधार पर खारिज कर दिया गया है कि अपीलार्थी ने बिना किसी बाधा के अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए अपने दो बेटों की हत्या करने के लिए जहर दिया था, जो क्रूर और क्रूर प्रकृति का कार्य था। [पैरा 16] [1135-ए-बी]

बी.

2. यहां रुकते हुए, अदालत इस बात पर ध्यान देगी कि अपीलार्थी ने अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए कभी भी अपने बेटों की हत्या करने की कोशिश नहीं की। इसके विपरीत, उसने अपने प्रेमी के साथ अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए नहीं, बल्कि अपने प्रेमी द्वारा उठाए गए झगड़े पर निराशा और हताशा में अपने बच्चों के साथ आत्महत्या करने की कोशिश की थी। यह न्यायालय नैतिकता और नैतिकता पर समाज को उपदेश देने के लिए एक संस्था नहीं है और कानून के शासन की परेशान करने वाली उपस्थिति से इस संबंध में आगे नहीं कह सकता है। [पैरा 17] [1135-सी-डी]

सी.

डी.

3. उस ने कहा, इसे केवल एक 'क्रूर और क्रूर' अपराध के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि अपीलार्थी स्वयं उसके जीवन को समाप्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे उसकी भतीजी ने समय पर रोक दिया था। इसके अलावा, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक/जेल महानिरीक्षक द्वारा पत्र No.4369/PS1/2018 दिनांक 16.02.2018 के माध्यम से दी गई राज्य स्तरीय समिति की सिफारिश में उनके निर्विवाद चिंतनशील आचरण के साथ-साथ पहले से ही लंबे समय तक कारावास की अवधि को भी नोट किया गया है। [पैरा 18] [1135-ई]

ई.

4. इस प्रकार, यह न्यायालय महसूस करता है कि राज्य द्वारा अपीलार्थी की समयपूर्व रिहाई के लिए राज्य स्तरीय समिति की सिफारिश को स्वीकार नहीं करने का कोई वैध कारण/न्यायोचित आधार नहीं है। न्यायालय अपराध और इस तथ्य से बेखबर नहीं है कि अपीलार्थी (माँ) पहले ही भाग्य के क्रूर हाथों से पीड़ित हो चुकी है। इसका कारण एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें यह न्यायालय प्रवेश करने से बचेगा। [पैरा 19] [1135-एफ]

एफ.

जी.

5. तमिलनाडु राज्य का आदेश जैसा कि जी. ओ. में निहित है। (घ) गृह (कारागार -

एच.

IV) अपीलार्थी की समयपूर्व रिहाई के अनुरोध को अस्वीकार करते हुए सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव के हस्ताक्षर के तहत विभाग को अलग कर दिया जाता है।[पैरा 20] [1135-जी-एच]

आंध्र प्रदेश राज्य बनाम रायवरपु पुन्नय्या,

(1976) 4 एससीसी 382:[1977] 1 एस. सी. आर. 601; राज्य

बी.

उत्तराखंड बनाम सचेंद्र सिंह रावत, (2022) 4 एससीसी

227 – संदर्भित किया गया।

गुरुस्वामी पिल्लई बनाम राज्य, 1991 (1) एम. डब्ल्यू. एन. (क्र.) 153;

सुयंबुक्कानी बनाम राज्य, 1989 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 481-संदर्भित।

सी.

मामला कानून संदर्भ

[1977] 1 एससीआर 601

संदर्भित किया गया है

पैरा 14

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2023 की आपराधिक अपील संख्या 1389।

डी.

2019 के सी. आर. एल. ए. एम. डी. संख्या 186 में मदुरै में मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 1 से। नागमुथु, वरिष्ठ अधिवक्ता, एस. प्रभु राम सुब्रमण्यम, रघुनाथ सेतुपति बी., भारतीमोहन एम., सुश्री प्रिया आर., एस. सबरी बाला पांडियन, अविनाश कुमार, वैरावन, सुधाकर, विकास, अधिवक्ता।अपीलार्थी के लिए।डॉ. जोसेफ अरस्तू एस., सुश्री वैदेही रस्तोगी, अधिवक्ता।उत्तरदाता के लिए।

ई.

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

अहसानउद्दीन अमानुल्लाह, जे।

एफ.

छुट्टी दे दी गई।

2. वर्तमान अपील मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ द्वारा पारित अंतिम निर्णय और आदेश दिनांक 05.08.2019 (जिसे इसके बाद "विवादित निर्णय" के रूप में संदर्भित किया गया है) के खिलाफ निर्देशित है, जिसमें आंशिक रूप से 2019 की आपराधिक अपील (एम. डी.) संख्या 186 (जिसे इसके बाद "उच्च न्यायालय" के रूप में संदर्भित किया गया है) की अनुमति दी गई है।

जी.

वास्तविक प्रिज्म:

3. अपीलार्थी के बारे में कहा जाता है कि उसका सुरेश नामक व्यक्ति के साथ संबंध था, जो उसे अक्सर धमकी देता था। इसने उन्हें ए के लिए निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया

एच.

1127

नागरथिनम बनाम स्टेट थ्रू द इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस [अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] ए.

अपने बच्चों के साथ आत्महत्या कर लें। इस तरह की कार्रवाई को अपनाने के अपने फैसले के अनुसार, उन्होंने पौधों के लिए कीटनाशक खरीदे और अपने दो बच्चों, रामर और लक्ष्मणन नाम के जुड़वा बच्चों को जहर दिया। इसके बाद, जब अपीलार्थी ने कीटनाशक को खुद सेवन करने के लिए एक टम्बलर में डाला, तो उसकी भतीजी ने उसे नीचे धकेल दिया। हालाँकि, दुर्भाग्य से, दोनों बच्चों को अस्पताल पहुंचने पर मृत घोषित कर दिया गया, जिससे भारतीय दंड संहिता, 1860 (इसके बाद "आई. पी. सी." के रूप में संदर्भित) की धारा 242 के तहत सेम्पट्टी पुलिस स्टेशन में 2003 की एफ. आई. आर. No.115 दिनांक 28.03.2003 की स्थापना हुई।

बी.

4. मुकदमे के बाद, विद्वत अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश (फास्ट ट्रैक कोर्ट), डिंडीगुल ने 2004 के सत्र मामले संख्या 92 में निर्णय और आदेश द्वारा अपीलार्थी को आई. पी. सी. की धारा 232 और 309 के तहत दोषी ठहराया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इसने प्रत्येक अपराध के लिए कुल 5,000/- रुपये का जुर्माना भी लगाया और आत्महत्या करने का प्रयास करने के अपराध के लिए, उसे एक वर्ष की अवधि के लिए साधारण कारावास से गुजरने का आदेश दिया गया और 1,000/- रुपये का जुर्माना लगाया गया, जिसमें विफल रहने पर वह आई. पी. सी. की धारा 309 के तहत तीन महीने की अतिरिक्त अवधि के लिए साधारण कारावास से गुजरेगी।

सी.

डी.

5. अपील में, उच्च न्यायालय ने आई. पी. सी. की धारा 309 के तहत अपीलार्थी को बरी करते हुए अपीलार्थी की याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार कर लिया, जबकि आई. पी. सी. की धारा 302 के तहत दोषसिद्धि को बरकरार रखा।

ई.

6. अपीलार्थी ने लगभग 20 साल तक कारावास का सामना करने के बाद समय से पहले रिहाई के लिए आवेदन किया। हालाँकि, राज्य स्तरीय समिति की सिफारिश को तमिलनाडु राज्य द्वारा उनके द्वारा किए गए अपराध (अपराधों) की क्रूर और क्रूर प्रकृति को देखते हुए, जी. ओ. (डी) संख्या 1127 दिनांक 24.09.2019 के माध्यम से खारिज कर दिया गया था।

एफ.

अपीलार्थी द्वारा प्रस्तुतियाँ:

7. अपीलार्थी के विद्वान वरिष्ठ वकील ने प्रस्तुत किया कि भले ही यह माना जाता है कि उसने अपने बच्चों के साथ जहर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी, लेकिन यह अचानक उकसावे के कारण था जो आई. पी. सी. की धारा 300 के अपवाद 1 के तहत आता है। इसके अलावा, अपीलार्थी अपने दो बेटों के साथ पारिवारिक आत्महत्या का चरम माग अपनाने वाली माँ होने के नाते आई. पी. सी. की धारा 1 से धारा 300 के अपवाद के तहत एक विस्तारक परिस्थिति है। और, जब माँ बच गई थी/भाग

गई थी और बच्चों की मृत्यु हो गई थी, तो यह आईपीसी की धारा 304 भाग I के तहत दंडनीय होगा। इस संबंध में निर्णयों पर निर्भरता रखी गई थी

जी.

एच.

1128

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 4 एस सी आर।

गुरुस्वामी में मद्रास उच्च न्यायालय की विद्वान खंड पीठों

पिल्लई बनाम राज्य, 1991 (1) एम. डब्ल्यू. एन. (सी. आर.) 153 और सुयंबुक्कानी बनाम राज्य, 1989 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 481।

8. वैकल्पिक रूप से, विद्वान वरिष्ठ वकील ने जोरदार प्रचार किया कि अपीलार्थी को कारावास की लंबी अवधि और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि जिला प्राधिकरणों और जेल विभाग की राज्य स्तरीय समिति ने 16.02.2018 [संदर्भ अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक/जेल महानिरीक्षक पत्र <ID4] पर अपीलार्थी को उसके निर्विवाद सकारात्मक आचरण और लंबे कारावास के कारण रिहा करने की सिफारिश की थी, कम से कम गृह (जेल-IV) विभाग के जी. ओ. (सुश्री) संख्या 64 दिनांक 01.02.2018 का लाभ दिया जाना चाहिए और इस प्रकार, तमिलनाडु राज्य द्वारा जी. ओ. (डी.

बी.

सी.

डी.

उत्तरदायी-राज्य की प्रस्तुतियाँ:

9. प्रार्थनाओं का विरोध करने वाले एकमात्र प्रतिवादी-राज्य के विद्वान वकील ने जोर देकर आग्रह किया कि अपीलकर्ता द्वारा किया गया कार्य क्रूर और क्रूर था क्योंकि छोटे बच्चों को जहर दिया गया था और उन्हें मार दिया गया था और ठीक है, अपीलकर्ता की समय से पहले रिहाई को राज्य द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। गुण-दोष पर, यह प्रस्तुत किया गया कि निचली अदालत और उच्च न्यायालय दोनों ने मामले के सभी पहलुओं पर सावधानीपूर्वक विचार किया था, और कोई योग्यता नहीं पाते हुए, उच्च न्यायालय ने आई. पी. सी. की धारा 303 के तहत दोषसिद्धि को बरकरार रखा था।

ई.

एफ.

विश्लेषण, कारण और निष्कर्ष:

10. मामले पर विस्तार से विचार करने के बाद, इस न्यायालय ने पाया कि जिन परिस्थितियों में अपीलार्थी ने अपने दो बेटों को जहर दिया था, वे स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि वह अत्यधिक मानसिक तनाव की स्थिति में थी। हालाँकि, अपीलार्थी के लिए विद्वान वरिष्ठ वकील के सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, मामले को हत्या के बराबर नहीं होने वाली हत्या के दायरे में लाने का लाभ देना मुश्किल है।

जी.

11. आई. पी. सी. की धारा 299, 300, 302 और 304 को पुनः प्रस्तुत करना उपयोगी होगा, जो आगे की कार्यवाही के लिए निम्नानुसार है:

एच.

1129

नागरथिनम बनाम स्टेट थ्रू द इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस [अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] ए.

ए.

." 299. दण्डनीय नरहत्या—जो कोई मृत्यु के इरादे से कोई कार्य करके, या ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से मृत्यु का कारण बनता है जिससे मृत्यु होने की संभावना है, या इस ज्ञान के साथ कि इस तरह के कार्य से मृत्यु होने की संभावना है, वह दोषपूर्ण नरहत्या का कार्य करता है।

दृष्टांत

बी.

(क) एक गड्ढे पर लाठी और घास डालता है, जिससे मृत्यु हो सकती है, या इस ज्ञान के साथ कि मृत्यु होने की संभावना है। जेड यह मानते हुए कि जमीन दृढ़ है, उस पर चलता है, गिर जाता है और मारा जाता है। ए ने गैर इरादतन हत्या का अपराध किया है।

सी.

(ख) A जानता है कि Z एक झाड़ी के पीछे है। बी को यह पता नहीं है। ए, कारण बनाने का इरादा रखता है, या यह जानते हुए कि जेड की मृत्यु होने की संभावना है, बी को झाड़ी पर गोली चलाने के लिए प्रेरित करता है। B गोली चलाता है और Z को मार देता है। यहाँ B बिना किसी अपराध के दोषी हो सकता है। लेकिन ए ने गैर इरादतन हत्या के अपराध को कम कर दिया है।

डी.

(ग) ए, एक मुर्गी को मारने और चोरी करने के इरादे से गोली मारकर, बी को मार देता है, जो एक झाड़ी के पीछे है; ए को पता नहीं था कि वह वहाँ था। यहाँ, हालाँकि ए एक गैरकानूनी कार्य कर रहा था, वह गैर-इरादतन हत्या का दोषी नहीं था, क्योंकि उसका इरादा बी को मारने का नहीं था, या एक ऐसा कार्य करके मृत्यु का कारण बनना था जो उसे पता था कि मृत्यु का कारण बन सकता है।

ई.

स्पष्टीकरण 1.—एक व्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक चोट पहुँचाता है, जो किसी विकार, बीमारी या शारीरिक दुर्बलता के तहत श्रम कर रहा है, और इस तरह उस अन्य की मृत्यु को तेज करता है, उसकी मृत्यु का कारण माना जाएगा।

एफ.

स्पष्टीकरण 2.—जहाँ मृत्यु शारीरिक चोट के कारण होती है, वहाँ जो व्यक्ति इस तरह की शारीरिक चोट का कारण बनता है, उसे मृत्यु का कारण माना जाएगा, हालाँकि उचित उपचार और कुशल उपचार का सहारा लेने से मृत्यु को रोका जा सकता था।

जी.

स्पष्टीकरण 3.—माँ के गर्भ में बच्चे की मृत्यु का कारण हत्या नहीं है।लेकिन यह एक जीवित बच्चे की मौत का कारण बनने के लिए गैर-इरादतन हत्या के बराबर हो सकता है, अगर उस बच्चे का कोई हिस्सा पैदा किया गया है, हालांकि बच्चे ने सांस नहीं ली है या पूरी तरह से पैदा नहीं हुआ है।

एच.

1130 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 4 एस. सी. आर.

300. हत्या—इसके बाद के मामलों को छोड़कर, गैर-इरादतन हत्या, यदि वह कार्य जिसके द्वारा मृत्यु हुई है, मृत्यु के इरादे से किया गया है, या—दूसरा—यदि यह ऐसी शारीरिक चोट पहुंचाने के इरादे से किया गया है जो अपराधी जानता है कि उस व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना है जिसे नुकसान पहुंचाया गया है, या -

बी.

तीसरा—यदि यह किसी व्यक्ति को शारीरिक चोट पहुंचाने के इरादे से किया जाता है और शारीरिक चोट पहुंचाने का इरादा प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त है, या -

सी.

चौथा—यदि कार्य करने वाला व्यक्ति जानता है कि यह इतना आसन्न रूप से खतरनाक है कि यह सभी संभावनाओं में, मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनता है जिससे मृत्यु होने की संभावना है, और मृत्यु या ऐसी चोट के जोखिम के लिए बिना किसी बहाने के ऐसा कार्य करता है जैसा कि ऊपर कहा गया है।

डी.

दृष्टांत

(a) A उसे मारने के इरादे से Z को गोली मार देता है।Z परिणामस्वरूप मर जाता है।एक हत्या करता है।

(ख) ए, यह जानते हुए कि जेड ऐसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है कि एक प्रहार से उसकी मृत्यु होने की संभावना है, उसे शारीरिक चोट पहुंचाने के इरादे से मारता है।Z प्रहार के परिणामस्वरूप मर जाता है।ए हत्या का दोषी है, हालांकि प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में आघात स्वास्थ्य की अच्छी स्थिति में किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है।लेकिन अगर ए, यह न जानते हुए कि जेड किसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है, उसे ऐसा झटका देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में किसी व्यक्ति को स्वास्थ्य की अच्छी स्थिति में नहीं मारेगा, तो यहां ए, हालांकि वह शारीरिक चोट पहुंचाने का इरादा रखता है, हत्या का दोषी नहीं है, अगर उसका इरादा मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट पहुंचाने का नहीं था जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनती है।

ई.

एफ.

(ग) ए जानबूझकर जेड को एक तलवार-कट या क्लब-घाव देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में एक आदमी की मौत का कारण बनता है।Z परिणामस्वरूप मर जाता है।यहाँ ए, हत्या का दोषी है, हालाँकि उसका इरादा जेड की मौत का कारण बनने का नहीं हो सकता है।

जी.

(घ) ए बिना किसी बहाने के लोगों की भीड़ में एक भरी हुई डिब्बे को गोली मार देता है और उनमें से एक को मार देता है। ए हत्या का दोषी है, ए

एच.

1131

नागरथिनम बनाम स्टेट थ्रू द इंसपेक्टर ऑफ पुलिस [अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] ए.

हालाँकि हो सकता है कि उसके पास किसी विशेष व्यक्ति को मारने की पूर्व नियोजित योजना न हो।

अपवाद 1.—जब गैर-इरादतन हत्या हत्या नहीं है।—

दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अपराधी, गंभीर और अचानक उकसावे से आत्म-नियंत्रण की शक्ति से वंचित होने के बावजूद, उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है जिसने उकसावा दिया या गलती या दुर्घटना से किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है। उपरोक्त अपवाद निम्नलिखित प्रावधानों के अधीन है:— सबसे पहले।—कि किसी व्यक्ति को मारने या नुकसान पहुँचाने के बहाने के रूप में अपराधी द्वारा उकसावे की मांग या स्वेच्छा से उकसाया नहीं जाता है।

बी.

सी.

दूसरा।—कि कानून के पालन में की गई किसी भी चीज़ या ऐसे लोक सेवक की शक्तियों के वैध प्रयोग में किसी लोक सेवक द्वारा उकसावा नहीं दिया जाता है।

तीसरी बात।—कि उकसावा निजी रक्षा के अधिकार के वैध प्रयोग में की गई किसी भी चीज़ द्वारा नहीं दिया जाता है।

स्पष्टीकरण।—क्या उकसाना इतना गंभीर और अचानक था कि अपराध को हत्या के बराबर होने से रोका जा सके, यह तथ्य का सवाल है।

डी.

ई.

दृष्टांत

(a) A, Z द्वारा दिए गए उकसावे से उत्तेजित जुनून के प्रभाव में, जानबूझकर Y, Z के बच्चे को मार देता है। यह हत्या है, क्योंकि बच्चे द्वारा उकसावा नहीं दिया गया था, और बच्चे की मृत्यु उकसावे के कारण कोई कार्य करने में दुर्घटना या दुर्भाग्य से नहीं हुई थी। (बी) वाई ए को गंभीर और अचानक उकसाता है, इस उकसावे पर, वाई पर पिस्तौल चलाता है, न तो इरादा रखता है और न ही खुद को जानता है कि जेड को मारने की संभावना है, जो उसके पास है, लेकिन दृष्टि से बाहर है। A किल्स Z. यहाँ A ने हत्या नहीं की है, बल्कि केवल गैर-इरादतन हत्या की है।

एफ.

जी.

(ग) ए को कानूनी रूप से जेड, एक बेलिफ द्वारा गिरफ्तार किया जाता है। ए गिरफ्तारी से अचानक और हिंसक जुनून के लिए उत्साहित होता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है, क्योंकि उकसावा एक लोक सेवक द्वारा अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए किया गया था।

एच.

1132 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 4 एस. सी. आर.

(घ) ए मजिस्ट्रेट जेड के समक्ष गवाह के रूप में उपस्थित होता है। जेड का कहना है कि वह ए के बयान के एक भी शब्द पर विश्वास नहीं करता है, और ए ने खुद को नुकसान पहुंचाया है। ए इन शब्दों से अचानक जुनून में चला जाता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है।

(ई) निजी रक्षा के अधिकार के प्रयोग में जेड की नाक, जेड को खींचने का प्रयास, उसे ऐसा करने से रोकने के लिए ए को पकड़ता है। ए को परिणामस्वरूप अचानक और हिंसक जुनून की ओर ले जाया जाता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है, क्योंकि उकसावा निजी रक्षा के अधिकार के प्रयोग में की गई चीज द्वारा दिया गया था।

बी.

सी.

(च) जेड स्ट्राइक बी. बी. इस उकसावे से हिंसक क्रोध के लिए उत्तेजित होता है। ए, एक दर्शक, बी के क्रोध का लाभ उठाने का इरादा रखता है, और उसे जेड को मारने का कारण बनता है, उस उद्देश्य के लिए बी के हाथ में एक चाकू रखता है। B Z को चाकू से मार देता है। यहाँ बी ने केवल गैर इरादतन हत्या की होगी, लेकिन ए हत्या का दोषी है।

डी.

अपवाद 2.—यदि अपराधी व्यक्ति या संपत्ति की निजी रक्षा के अधिकार का सद्भावना से प्रयोग करते हुए कानून द्वारा उसे दी गई शक्ति से अधिक हो जाता है और उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है जिसके खिलाफ वह पूर्व-विचार के बिना और इस तरह के बचाव के उद्देश्य से आवश्यक से अधिक नुकसान करने के इरादे के बिना रक्षा के ऐसे अधिकार का प्रयोग कर रहा है, तो दंडनीय हत्या हत्या नहीं है।

ई.

चित्रण

जेड ए को घोंघे पर चढ़ाने का प्रयास करता है, इस तरह से नहीं कि ए को गंभीर चोट लगे। ए एक पिस्तौल निकालता है। जेड हमले में बना रहता है। अच्छे विश्वास में विश्वास करने वाला कि वह किसी अन्य तरीके से खुद को घोंघे पर चढ़ने से नहीं रोक सकता है, जेड को गोली मार देता है। ए ने हत्या नहीं की है, बल्कि केवल गैर-इरादतन हत्या की है। अपवाद 3.—दण्डनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अपराधी, एक लोक सेवक होने के नाते या लोक न्याय की उन्नति के लिए काम करने वाले लोक सेवक की सहायता करने वाला, कानून द्वारा उसे दी गई शक्तियों को पार करता है, और एक ऐसा कार्य करके मृत्यु का कारण बनता है जिसे वह सद्भावना से, ऐसे लोक सेवक के रूप में अपने कर्तव्य के उचित निर्वहन के लिए वैध और आवश्यक मानता है और उस व्यक्ति के प्रति दुर्भावना के बिना जिसकी मृत्यु हुई है।

एफ.

जी.

एच.

1133

नागरथिनम बनाम स्टेट थू द इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस [अहसानुद्दीन अमानुल्लाह, जे.] ए.

ए.

अपवाद 4.—दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि यह अचानक झगड़े पर जुनून की गर्मी में अचानक लड़ाई में पूर्व-चिंतन के बिना और अनुचित लाभ उठाए बिना या क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य किए बिना किया जाता है।

बी.

स्पष्टीकरण।—ऐसे मामलों में यह मायने नहीं रखता कि कौन सा पक्ष उकसाने की पेशकश करता है या पहला हमला करता है।

अपवाद 5.—दण्डनीय हत्या तब हत्या नहीं है जब वह व्यक्ति जिसकी मृत्यु हुई है, अठारह वर्ष से अधिक आयु का होने के कारण, मृत्यु का जोखिम उठाता है या अपनी सहमति से मृत्यु का जोखिम उठाता है।

सी.

चित्रण

ए, उकसावे से, स्वेच्छा से जेड, अठारह वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को आत्महत्या करने का कारण बनता है। यहाँ, जेड की युवावस्था के कारण, वह अपनी मृत्यु के लिए सहमति देने में असमर्थ था; इसलिए ए ने हत्या को उकसाया है।

डी.

XXX

302. हत्या के लिए सजा—जो भी हत्या करता है

उसे मृत्युदंड या आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी और जुर्माना भी लगाया जाएगा।

ई.

XXX

304. गैर इरादतन हत्या के लिए सजा

हत्या—जो कोई भी गैर-इरादतन हत्या करता है, जो हत्या के बराबर नहीं है, उसे (आजीवन कारावास), या किसी भी विवरण के कारावास से दंडित किया जाएगा, जो दस साल तक बढ़ सकता है, और जुर्माने के लिए भी उत्तरदायी होगा, यदि वह कार्य जिसके द्वारा मृत्यु हुई है, मृत्यु का कारण बनने के इरादे से किया गया है, या जूरी में ऐसा शारीरिक कारण है जिससे मृत्यु होने की संभावना है, या किसी भी विवरण के कारावास से जो दस साल तक बढ़ सकती है, या जुर्माने के साथ, या दोनों के साथ, यदि कार्य इस ज्ञान के साथ किया जाता है कि यह मृत्यु का कारण बन सकता है, लेकिन मृत्यु का कारण बनने के किसी भी इरादे के बिना, या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनता है जिससे मृत्यु होने की संभावना है।"

एफ.

जी.

12. वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, हम पाते हैं कि अपीलार्थी द्वारा प्रस्तुत परिदृश्य अपवादों के अंतर्गत नहीं आते हैं।

एच.

1134

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

आई. पी. सी. की धारा 300 के तहत गणना की गई। इससे भी अधिक, जब उन व्यक्तियों की सहमति नहीं थी जिन्हें खिलाया गया था और अपीलार्थी द्वारा प्रशासित कीटनाशक का सेवन करने पर उनकी मृत्यु हो गई थी। गुरुस्वामी पिल्लई (ऊपर) में, पिता ने अपनी नाबालिग बेटी का गला ब्लेड से काटकर उसकी मौत का कारण बना और आत्महत्या करने का भी प्रयास किया था। मुकदमे के दौरान, यह सामने आया था कि पिता और बेटी दोनों ने एक संयुक्त निर्णय लिया था कि उन्हें अपना जीवन समाप्त कर लेना चाहिए। और इस प्रकार, उस पृष्ठभूमि में, मानसिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, वित्तीय स्थिति और उपस्थित परिस्थितियों दोनों के संबंध में, उच्च न्यायालय ने आई. पी. सी. की धारा 304 भाग 1, आई. पी. सी. के तहत आई. पी. सी. की धारा 304 से दोषसिद्धि को एक में परिवर्तित करके लाभ देना विवेकपूर्ण पाया था।

बी.

सी.

13. इसी तरह, घटना से ठीक पहले सुयंबुक्कानी (सुप्रा) के मामले में, जिसके कारण उसकी पत्नी ने दो बच्चों के साथ खुद को डुबो दिया, इसके अलावा उसमें आरोपी द्वारा उसके साथ दुर्व्यवहार और पिटाई का इतिहास होने के अलावा, तत्काल उकसावा यह था कि उसे दुर्भाग्यपूर्ण घटना से ठीक एक दिन पहले पीटा गया था, और सुबह और दोपहर के भोजन के समय भी, जिसने उसे तुरंत अपने दो बच्चों के साथ एक कुएं में कूदकर अपनी जान लेने की कोशिश करने के लिए उकसाया, जहां से उन्हें बाहर निकाला गया था। लेकिन दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई, और उसे बचा लिया गया और निचली अदालत द्वारा आई. पी. सी. की धारा 309 के तहत दो मामलों में दोषी ठहराया गया। यह उल्लेखनीय है कि यहां तक कि बच्चों को भी उनके पिता द्वारा दुर्व्यवहार किया गया था क्योंकि दो बच्चों के पोस्टमॉर्टम के दौरान, उनके शवों पर कई खरोंच पाए गए थे और आरोपी की चिकित्सा जांच में उसके शरीर पर चोटों का पता चला था और उसकी ओर से लिया गया रुख यह था कि एक माँ के रूप में वह आत्महत्या करना चाहती थी और उसने सोचा कि यह उसका कर्तव्य है कि वह अपनी संतान को न छोड़े क्योंकि वह अपने बच्चों को पीछे छोड़कर अकेले मरने के विचार के साथ खुद को सुलझा न सके।

डी.

ई.

एफ.

14. इस प्रकार, अपीलार्थी द्वारा सेवा में लगाए गए दोनों मामलों ने अपने स्वयं के तथ्यों को बदल दिया। वास्तव में, उन्हें उच्च न्यायालय द्वारा भी नोट किया गया था। उन्हें हमें और हिरासत में लेने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ तक कि राज्य के गढ़ पर भी आंध्र प्रदेश बनाम रायवरपु पुन्नय्या, (1976) 4 एस. सी. सी. 382,

जी.

अपीलार्थी लाभान्वित नहीं होता है। हमने राज्य में भी कारक बनाया है

उत्तराखंड बनाम सचेंद्र सिंह रावत, (2022) 4 एससीसी 227।

15. चाहे जो भी हो, न्यायालय को आई. पी. सी. की धारा 304 भाग 1 के तहत आई. पी. सी. की धारा 302 से दोषसिद्धि को परिवर्तित करने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता है।

एच.

ए.

16. हालाँकि, समय से पहले रिहाई के मुद्दे पर, यह विवाद में नहीं है कि आजीवन कैदियों के मामले में कैदियों को समय से पहले रिहाई का लाभ 25.02.2018 पर न्यूनतम दस साल की कैद है, और ऐसे उद्देश्य के लिए जी. ओ. (सुश्री) संख्या 64 दिनांक 01.02.2018 में ऐसी सिफारिशें करने के लिए एक राज्य स्तरीय समिति है। वर्तमान मामले में, अपीलार्थी की समय से पहले रिहाई के लिए राज्य स्तरीय समिति की सकारात्मक सिफारिश को राज्य द्वारा इस आधार पर खारिज कर दिया गया है कि अपीलार्थी ने बिना किसी बाधा के अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए अपने दो बेटों की हत्या करने के लिए जहर दिया था, जो क्रूर और क्रूर प्रकृति का कार्य था।

बी.

17. यहां रुकते हुए, अदालत इस बात पर ध्यान देगी कि अपीलार्थी ने अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए कभी भी अपने बेटों की हत्या करने की कोशिश नहीं की। इसके विपरीत, उसने अपने प्रेमी के साथ अपने अवैध संबंध को जारी रखने के लिए नहीं, बल्कि अपने प्रेमी द्वारा उठाए गए झगड़े पर निराशा और हताशा में अपने बच्चों के साथ आत्महत्या करने की कोशिश की थी। यह न्यायालय नैतिकता और नैतिकता पर समाज को उपदेश देने वाली संस्था नहीं है और हम कानून के शासन की परेशान करने वाली उपस्थिति से बंधे इस मुद्दे पर आगे कुछ नहीं कहते हैं।

सी.

डी.

18. उस ने कहा, इसे केवल एक 'क्रूर और क्रूर' अपराध के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि अपीलार्थी स्वयं उसके जीवन को समाप्त करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे उसकी भतीजी ने समय पर रोक दिया था। इसके अलावा, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक/जेल महानिरीक्षक द्वारा पत्र No.4369 पी. एस. 1/2018 दिनांक 16.02.2018 के माध्यम से दी गई राज्य स्तरीय समिति की सिफारिश में उनके निर्विवाद चिंतनशील आचरण के साथ-साथ लंबे समय तक जेल में रहने के बारे में भी उल्लेख किया गया है।

ई.

19. इस प्रकार, यह न्यायालय महसूस करता है कि राज्य द्वारा अपीलार्थी की समयपूर्व रिहाई के लिए राज्य स्तरीय समिति की सिफारिश को स्वीकार नहीं करने का कोई वैध कारण/न्यायोचित आधार नहीं है। हम अपराध से बेखबर नहीं हैं, लेकिन हम इस तथ्य से समान रूप से बेखबर नहीं हैं कि अपीलार्थी (मां) पहले ही भाग्य के क्रूर हाथों से पीड़ित हो चुकी है। इसका कारण एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें यह न्यायालय प्रवेश करने से बचेगा।

एफ.

जी.

20. उपरोक्त कारणों से, तमिलनाडु राज्य का आदेश, जैसा कि जी. ओ. में निहित है। (घ) अपीलार्थी की समयपूर्व रिहाई के अनुरोध को अस्वीकार करते हुए, सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव के हस्ताक्षर के तहत गृह (कारागार-IV) विभाग द्वारा जारी दिनांक 1127 को दरकिनार कर दिया गया है।

एच.

21. अपीलार्थी को सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव के हस्ताक्षर के तहत गृह (कारागार-IV) विभाग द्वारा जारी जी. ओ. (सुश्री) संख्या 64 दिनांक 01.02.2018 के अनुसार समय से पहले रिहाई का लाभ प्राप्त है।

22. तदनुसार, अपीलार्थी को किसी अन्य मामले में आवश्यकता नहीं होने पर तुरंत रिहा करने का निर्देश दिया जाता है।

बी.

23. अपील का निपटारा उपरोक्त शर्तों में किया जाता है।

अंकित ज्ञान

अपील का निपटारा किया गया।

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.